विचार बिन्दु

भातृभाव का अस्तित्व केवल आत्मा में और आत्मा के द्वारा ही होता है, यह और किसी के सहारे टिक ही नहीं सकता। –श्री अरविंद

अपरिमित ऊंचाइयों व चौडाईयों में बढ़ता भारत में भ्रष्टाचार

लोकतंत्र या कहें प्रजातंत्र या समाजवाद अथवा और भी कोई नाम जिनकी फिलोसॉफी और कृत्य इनसे मिलते-जुलते हैं, सभी भ्रष्टाचार के जनक हैं। इतना ही नहीं जिनोह्णे भी इस तरह के तंत्रों की अनुसंशा की वास्तव में वे सभी भी भारत में भ्रष्टाचार के दादा या पड़दादा हैं, ऐसा कहने में मुझे कोई आपत्ति नहीं। मेरी ऐसी धारणा अथवा सोच केवल मेरी ही नहीं है बल्कि असंख्य ऐसी सोच रखते हैं, वे व्यक्त नहीं करते इनमे तथाकथित कतिपय वे लोग भी शामिल हैं जो हमारे द्वारा ही चुनकर उन बड़े घरों में बैठ कर हमारे ऊपर शासन चलाते हैं। सही सोच होने पर भी वहां वे लोग मूक रहना पसंद करते हैं, उनकी ऐसी प्रवर्ति के कारणों पर जाना इस लेख की विषय सामग्री मैं नहीं बना सकता, क्योंकि ऐसा करने से इस लेख के उद्देश्य से विमुख होने की सम्भावना बनती है। परन्तु चुनने के बाद उन्हें सभी प्रकार की सुरक्षा स्वतः मिलना संबिधान के अंतर्गत शुरू हो जाती है जिसमे भ्रष्टाचार में संलिप्त होने अथवा खुद करने की आज़ादी भी शामिल है। ऐसे लोग चूँकि किसी न किसी क्षेत्र से जनता द्वारा मेजोरिटी से चुने होते हैं,भले ही उन्हें सत्तर प्रतिशत जनता ने नहीं चुना हो।

आज से कई वर्ष पहले भी अपने एक लेख में मैंने यह उल्लेख किया था जो वास्तव में मेरी सोच नहीं बल्कि रूस के एक विद्वान् समाजशास्त्री ने अपनी पुस्तक में किया उसका नाम है, सोरोस्की। उनका कथन है कि किसी भी देश को जहाँ डेमोक्रेसी या लोकतंत्र पार्टी आधारित हो वहां भ्रष्टाचार ऊपर से नीचे और दाएं से बायें फैलना अवश्यम्भावी है। और भारत में भी आज़ादी के बाद ऐसा ही हुआ है। वर्तमान में यह दैत्य इतना प्रबल हो चुका है कि पूरी कड़ी में इसे कहीं से भी हिलाना दुष्कर है। और यदि कोई ऐसा प्रयास भी करता है तो वह अलगथलग कर दिया जाता है इसलिए बात आकर अटकती है जनता पर। देश की जनता मूर्ख, अविवेकी, स्वार्थी, राष्ट्र विरोधी, आदि विश्लेषणों से विभूषित हो चुकी है। इसलिए मैं इस लेख में पाठकों को ऐसी प्रवर्ति से निपटने के लिए कोई सूत्र नहीं दे रहा हूँ और ऐसी आशा भी नहीं करनी चाहिए क्योंकि समस्या व्यापक है। केवल मैं तो अपनी सोच, जो हो सकता है अन्य की भी हो, पाठकों को अवगत कराना चाहता हूँ।

शीर्षक में मैंने भ्रष्टाचार की ऊंचाइयों और चौड़ाईयों में वृद्धि का उल्लेख किया है। इसका आशय है कि यह देश के कण कण में अब विध्यमान है, और इसके असख्य रूप हैं, उदाहरण के लिए राजस्थान के सरकारी स्कूलों के अध्यापकों के बिना जरूरत पल्टन पलायन सदृश्य थोक में स्थानांतरण ; नियम विरुद्ध निर्माणों को संरक्षण, नियुक्तिओं में सिफारशें, विश्वविधालयों में कुलपतिओं की नियुक्ति, महाविद्यालयों में वांछित योग्यता से हटकर अन्य कारणों से नियुक्तियां, भवन निर्माण में कमीशनखोरी, फर्जी डिग्री प्रदान करने, झूंटे यात्रा बिल बना कर पेमेंट लेने, सरकारी खरीद में कमीशन आदि ।

वर्तमान में प्रधान मंत्री की भी सामर्थ नहीं कि वे अकेले इस राक्षस को धराशाही कर सके, वे तो अभी से ही जनता का सहयोग मांग रहे हैं। यह अलग बात है कि उनके काल में कानपुर से कनौज, बंगाल से महाराष्ट्र, देहली से हरियाणा, उत्तर प्रदेश से होते हुए बिहार, मध्यप्रदेश से राजस्थान, हरयाणा, पंजाब, आदि सभी जगह भ्रष्टाचार की बेल पोंड चुकी है और अभी तो यह पेरिनियल (सदैव फलने फूलने वाली) है। इस बेल की एक विशिष्ट पहचान है कि यह अंकुरित होते ही फल देने लगती है।

नॉएडा दिल्ली में अभी भष्टाचार से बने दो ट्विन टावर 32 मंजिला व् 100 मीटर से भी अधिक ऊंचाई के आवासीय बिल्डिंग के न्यायलय के आदेश से प्रशासन ने दस सेकंड से कम समय में गिरा दिए। ये सब जनता की जागरूकता और एक जुटता का अनूठा उदाहरण है। इसलिए जो लोग इससे जुड़े वे सभी प्रसंशा के पात्र हैं।

ऐसा लिखते हुए मैं प्रधान मंत्री श्री मोदी के प्रतिकूल कोई नकारात्मक विचार व्यक्त नहीं कर रहा हूँ क्योंकि मेरे हिसाब से वह एक मजबूत इच्छा शक्ति के धनी हैं और विपरीत परिस्तिथियों में बिलकुल विचलित होने वाले नहीं हैं। हो सकता है उन्होंने जनता की नब्ज जानने के लिए ऐसा कह दिया हो? कि जनता इस सहयोग के लिए कैसे प्रतिक्रिया करती है..?

अधिकांश जनता का आंकलन है कि प्रधान मंत्री को अन्य पार्टिओं से सहयोग नहीं मिल रहा वे सभी एक जुट हो किसी प्रकार मोदी जी को प्रधान मंत्री नहीं देखना चाहते। इस सबके बावजूद मोदी जी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सर्वाधिक लोकप्रिय राजनेता हैं। असल में मोदी जी ने अभी विपक्ष का कुछ बिगाड़ा नहीं है बल्कि अनेकों के प्रति घोटालों व् भ्रष्टाचार के मामले चल रहे हैं। यही बात सबको परेशान और डराए हुए है। इसलिए अनहोनी के डर से मोदी को अनेक प्रकार से असहयोग और बदनाम करने में लगे हैं।

आश्चर्य की बात यह कि किसी विरोधी के पास अभी तक कोई रचनात्मक प्रस्ताव नहीं है जिस पर वे मोदी को घेर सकें। भविष्य बताएगा कि यह बेल कब सूखती है? तबतक इसका स्वाद चखते रहिये और वार्तालाप और सम्बाद कर आनद लेते रहिये।

एक बात मेरी समझ से परे है कि परवर्तन निदेशालय की छापेमारी खोज में इतनी भारी संख्या में करेंसी मुद्रा कैसे निकल रही है? नोट बंदी हुए अभी चार वर्ष ही निकले हैं। उसमे कहा गया था कि सभी नोट जो चलन में थे वापिस बैंकों में आ गये। इतने कम समय में लोगों ने विशालकाय करेंसी नोट कहाँ से प्राप्त कर लिए? मैं समझता हूँ किसी एक समय में रिज़र्व बैंक में भी इतने नोट नहीं मिलेंगे? करेंसी नोटों की इतनी बिपुल राशि जिसे रखने के किये तिजोरियां, अलमारियां कम पड़ जाय और नोटों को कमरों के फर्श पर ढेरियों के रूप में एकत्रित किया जाये। यह इस बात का द्योतक है कि भ्रष्टाचार की कोई सीमा अब नहीं रही, बल्कि यह अपरिमित है।

मुझे लिखने की आवश्यकता नहीं कि एकत्रित नोटों की संख्या इतनी विशाल कि एक नहीं अनेक नोट गिनने की मशीने लगानी पड़े। मुझे आज से लगभग 50 वर्ष पूर्व घटित दिल्ली में भारतीय स्टेट बैंक की घटना याद आती है जब दिन दहाड़े एक व्यक्ति बैंक से धोखाधड़ी कर एक बड़ी राशि निकाल ले गया था।

नॉएडा दिल्ली में अभी भष्टाचार से बने दो ट्विन टावर 32 मंजिला व् 100 मीटर से भी अधिक ऊंचाई के आवासीय बिल्डिंग के न्यायलय के आदेश से प्रशासन ने दस सेकंड से कम समय में गिरा दिए। ये सब जनता की जागरूकता और एक जुटता का अनूठा उदाहरण है। इसलिए जो लोग इससे जुड़े वे सभी प्रसंशा के पात्र हैं। कोआपरेटिव आंदोलन का भी यही सिद्धांत है कि जब एक ही समस्या से जनता का बड़ा समुदाय लम्बे समय से ग्रसित या पीड़ित हो रहा हो तब उनमे एकजुट या संघटित होने की भावना प्रबल हो उठती है और वे मिलकर उस व्याधि को समूल विनाश कर डालते हैं।

मैं नहीं समझता कि मोदी जी अपने अगले कार्यकाल में भी यदि वे पुनः प्रधानमंत्री बनते हैं, भ्रष्टाचार के दैत्य को देश से समूल मिटा पाएंगे? फिर भी आशा करनी चाहिए कि ऐसा हो क्योंकि भ्रस्टाचार मुक्त भारत ही सबके लिए सुख, शांति, स्वस्थ्य और सम्पन्नता ला सकता है। लेख के अंत में चलते चलते पाठकों के मानसिक कसरत व् स्वास्थ्य के हितार्थ एक समीकरण प्रस्तुत कर रहा हूँ जो मेरा नहीं है बल्कि अमेरिका की प्रसिद्ध मेगज़ीन 'स्पान' में वर्ष 1998 में इंग्लिश में ही छपा था, शीर्षक था 'इंटरनेशनल कोऑपरेशन अंगेस्ट करप्शन' लेखक का नाम 'रोबर्ट क्लीटगार्ड'।

इस समीकरण को एक बार भारत सरकार के एक मंत्री ने खुद की ईजाद बता कर एक अंग्रेजी के अखबार में ये छापा कि उन्होंने यह समीकरण बनाया है जिससे भ्रष्टाचार के पहलुओं पर प्रकाश डाला जा सकता है। अर्थात हमारे केंद्रीय मंत्री ने भी किसी अन्य के द्वारा प्रतिपादित समीकरण को अपना बता कर अंग्रेजी के दैनिक अखबार में छपवा दिया। मैंने उस अखबार के संपादक को विरोध स्वरुप यर्थात से अवगत कराया फिर भी संपादक ने उसका कोई संज्ञान नहीं लिया।

समीकरण था :- (अनुवाद हिंदी में) भ्रष्टाचार॒ मोनोपोली (एकाधिकार) + डिस्क्रेशन (विवेकाधिकार) - एकाउंटेबिलिटी (जवाबदेही)। यहाँ स्वंग मैं इस समीकरण में एक विशेषता जोड़ कर समीकरण को भारत के सम्बन्ध में अधिक सशक्त करने का प्रयास करता हूँ।

फलस्वरूप, भ्रष्टाचार =॒ (मोनोपोली + डिस्क्रेशन - अकॉउंटेबिलिटी)स. (राजकीय संरक्षण)। अर्थात राजकीय संरक्षण के होते हुए अनुपातिक रूप से समीकरण का मूल्य कई गुना अधिक हो जाता है मेरे विद्वान् पाठक इस समीकरण को यदि क्वांटिफाई कर सकें तो में उनका ऋणी रहूँगा। (स॰ को कोष्ठक के ऊपर रेज टू द पॉवर पढ़े।)

–अतिथि सम्पादक,
प्रो.डॉ. वीर बहादुर सिंह,
(पूर्व कुलपति एवं डेयरीविज्ञ महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी वि.वि., उदयपुर)

सूना सावन -वीरान बहार

राजस्थान के सीकर जिले में हमारा गांव है लोसल। वहां हमारी सो साल पुरानी आलीशान पुस्तैनी हवेली आज भी खड़ी है। आज भी कमरों में सफेद झक्क एराइस का फर्स वैसे ही मौजूद है। हवेली में पांच चौक हैं, खुले आंगन वाले, ऊपर आसमान दिखता है। शेखावाटी की हवेली में अमूमन दो या तीन चौक होते हैं। हमारी हवेली में बड़े-बड़े पांच चौक होने के कारण हमें बड़ी हवेली वालों के नाम से जाना जाता था। चौक की दीवारें आज भी उन्हीं रंगीन चित्रों से अटी है जो सो साल पहले उकेरे गये थे। आज भी उनका रंग फीका नहीं पड़ा है, हां, समय के साथ कुछ सांवले अवश्य हो गये हैं। हवेली की बाहरी दीवारों पर भी अधिकांश चित्र मौजूद हैं। चित्रात्मक रंगीन हवेलिया शेखावाटी की अपनी विशिष्टता है, सेठाने की पहिचान। हवेली में घुसते ही पहले खुले चौक में एक ओर विशाल बरगद का पेड़ आज भी खड़ा है। बरगद के चबूतरे पर चिलम पीते हाली, ठाकर की जगह अब बस हवेली की रखवाली के लिए रखा माली है, और पास की कोठरी में उसका परिवार। दूसरे चौक के दोनो ओर दो बड़ी-बड़ी बैठकें हैं। तीसरे चौक के चारों ओर तिमंजली मुख्य हवेली है जिसके दर्जनों कमरे, साल, चौबारे, सूने पड़े हैं। कौनों में सेठानियों के बड़े कमरे हैं जिनमें आज भी ब्रिटेन, जर्मनी में छपी रंगीन तस्वीरें टंगी हैं। पीछे के चौथे छोटे चौक में रसोइयां और चौके हैं जहां आसन पाटे पर बैठ कर खाना खाया जाता था। उसके बाहर पांचवे चौक में गाय बैलों के ठाण और रथ भेली के ठांव बने हुए हैं। ठाणों में गायें तो नहीं रंभाती लेकिन ठावों में पुराने रथ, भेली, ऊंट की जीन, उसके गले और पांव के घुंघरूं अब भी पड़े हैं।

हवेली सूनी पड़ी है। परिवार की पांचवी-छटी पीढ़ी चल रही है। दो पड़दादाओं का परिवार, लोग देश में सब जगह फैले हुए हैं। आखिर में एक दादी इसी बड़ी हवेली में अकेली रहती थी, बड़ी सेठाणी, अपने पुराने ठसके के साथ। बेटे-पोते मिलने आते रहते। दादी जैसा कहती वैसा ही होता। उनका कहा टालने की किसी की हिम्मत नहीं थी। रुपये-पैसे से वे किसी पर निर्भर नहीं थी, फिर भी सभी नियमित भेजते रहते थे। पास के घर में बैंक था। मैनेजर खुद आकर रुपये दे जाता, चैक ले जाता। अपनी देख भाल का पूरा इन्तजाम उन्होंने कर रखा था। शरीर साथ दे रहा था, स्वास्थ्य ठीक था। अपने आखरी समय और उसके बाद क्या करना है, कैसे करना है, उन्होने घर के जोशीजी को सब लिखवा दिया था। गांव के एक रिस्तेदार सेठ जिनके पास उनका रुपया-पैसा रहता था, जो सब हिसाब-किताब रखते थे, उन्हें खर्चे की सारी हिदायते दे रखी थी। बेटों को भी बता दिया था। सब कुछ उनकी इच्छा के अनुरूप ही किया गया। उसके बाद जो हवेली में ताला लगा, सूनी हो गई।

इस बार तय हुआ कि सावन में बरसात होने के बाद कुछ दिन आकर हवेली में रहा जाय। बैठक में ही इन्तजाम कर दिया गया। कहां तो एक बड़ा गद्दा, गाव, तकिये, मसंदे, खिड़कियों में पानी छिड़की महकती खस की टट्टियां,

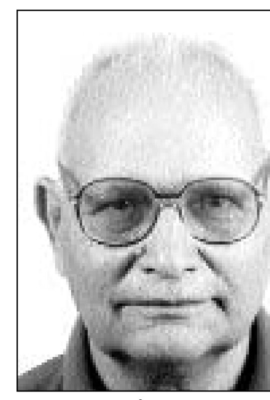

डॉ. श्रीगोपाल काबरा

रस्सी से खिंचता झालर वाला पंखा, और कहां अब डबल बैड, डनलप के गद्दे, तकिये, सोफा सेट, डाइनिंग टेबल और कुर्सियां, बिजली का पंखा, कूलर। मंहगे और सुन्दर हैं, लेकिन इस बैठक में मखमल में टाट के पैबंद से लगते हैं। बैठक इतनी बड़ी है कि यहीं बैड रूम, ड्राईंग रूम, डाइनिंग रूम सब। बाहर बाथरूम और टायलेट का सेट पहले ही बन चुका है। जरूरी भी था, कारण अब सुबह उठ कर कूये-बावडी तो जया नही जा सकता, हालांकि वे अब भी हैं, वहां के शिव मंदिर में अब भी पूजा अर्चना होती है। रसोई में गैस चूल्हा आ गया है। खाना स्वादिष्ट तो लगता है लेकिन चूल्हे की भोभर में मंद आंच पकती दाल या कच्चे जलते कोयले से देशी घी की लूण-धूणी दी गई पापड़ की चूरी, सोगरी, मूली की बात और थी। बाजरे की रोटी में वह स्वाद नहीं है। लूण्या घी की बात तो छोड़िये। अंगारे पर रखी रोटी पर सूं सूं करते मक्खन में लाल मिर्च, जीरे वाली सूस्यां रोटी और दही की जगह अब टोस्ट मिलते हैं। आसन पाटे की जगह टेबल पर बैठ कर खाना, बड़ा फूहड़-सा लगता है।

सावन का सोमवार। बरसात हो चुकी है। मौसम सुहावना है। इसी के लिए तो आये हैं। चलो अपने खेत पर चलते हैं। वहीं दाल बाटी बनवा कर खायेंगे। टीलों पर गये। बड़ा सुखद लग रहा था। आंखे सावन-की-डोकरी (बीरबहूटी) कों ढूढ रही थी। बरसात होते ही उन तपते धोरों में से कैसे अनगिनित लाल मखमली डोकरियां निकल कर ठुमकने लगती थी, सदा अचंभा होता था। बचपन में गीली मिट्टी के घरोंदें बनाने के साथ उनमें ठुमकती सावन की डोकरी की मखमली स्मृती गहरे से जुडी थी। सावन के झूले, सावन की डोकरी। लेकिन आश्चर्य दूर दूर तक एक भी नजर नहीं आई। सुख्खा काका से पूछा तो कहने लगे अब कहां सावन की डोकरी! सब खत्म हो गई। कीटनाशक सब को लील गये। कहने लगे, हवेली के आंगन में जो बूढ़ा बरगद है उस पर गौर किया? कैसे शाम होते ही रैन बसेरा करने आई गौरया और मैनाओं से चह चहाता था। और अब, मालूम ही नही पड़ता कब शाम हो गई। कबूतर तो सूनी हवेलियों में खूब हैं लेकिन बाकी पक्षी खत्म हो रहे हैं। कीटनाशकों मिले दाना खा कर मोर मरते है, चील, गिद्द समाप्त हो रहे हैं। जानवरों के शव हफ्तो सड़ते रहते हैं, कुत्ते नोचते रहते हैं। घर घर में कैंसर जैसी कोजी बीमारियां हो रही है। जवान और बच्चो में लकवा हो रहा है, सांस की बिमारी हो रही है। इन्ही की कोई सुध नहीं लेता तो सावन की डोकरी को कौन पूछे। सुन कर मन जुगुप्सा से भर गया। सुख्खा काका के कहने से तो ऐसा लग रहा था जैसे कीटनाशक से कैंसर नही, स्वयं कीटनाशक ही जीवन का कैंसर हो गये हैं।

सुख्खा काका के गुस्से का असल कारण मुझे तब मालूम हुआ जब हवेली लौटने पर बरगद पर चिड़ियाओं के बारे में मैने माली से पूछा। कीटनाशक सुख्खा काका के जवान बेटे को लील गया था। बेटे की झोंपडी में कीटनाशक रखा था। फर्स पर गिर गया। कुछ उसने कपड़े से समेट कर वापस डाला। उसकी तबियत खराब हो गई। सांस की तकलीफ हो गई, हाथ-पांव ढीले पड़ गए। अस्पताल में भर्ती करवाया। ठीक होकर घर आ गया लेकिन उसके एक महिने बाद ही घातक रक्त कैंसर से उसकी मौत हो गई। इलाज में ही घर लुट गया। उस समय तक भी कीटनाशक की हलकी महक झोपड़ी में थी। श्मशान से लौटते ही सुख्खा काका ने उस झोपडी को आग लगा कर नष्ट कर दिया था।

मुझे याद आई रसेल कार्सन की लिखी 'साइलेन्ट स्प्रिंग' किताब जिसमें उन्होने अमेरिका में हवाइ जहाजों से व्यापक स्तर पर छिड़के गए कीटनाशकों के कारण विलुप्त हुए पक्षी, निरजन वादियां और वीरान बहार का मार्मिक चित्रण किया है। साईलेंट स्प्रिंग - वीरान बहार। उसमें भी कीटनाशकों से इसी तरह हुए कैंसर से मृत्यु होने का विवरण है।

डॉ. श्रीगोपाल काबरा,
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

उत्तम मार्दव धर्म अर्थात विनयशीलता, कोमलता, मृदुता का भाव होना

जैन धर्म के दशलक्षण धर्म आत्मा के स्वाभाविक धर्म है। ये दस धर्म सार्थक जीवन जीने के अभिन्न अंग है । आज दूसरा धर्म उत्तम मार्दव धर्म दिवस है।

मार्दव अर्थात् विनयशील होना, मृदुता, कोमलता का भाव होना और मान, मद, अभिमान, अहंकार आदि दुर्गुणों का अभाव होना । किसी अहंकारी की तुलना मादक पदार्थ का सेवन करने वाले नशे में चूर व्यक्ति से से की जाती है। जैसे नशे में धुत व्यक्ति को कोई समझा नहीं सकता, औरों की तो बात ही क्या उसके सगे संबंधी जन भी उसे समझाने में असमर्थ होते हैं, उसी प्रकार प्रमादी, अभिमानी व्यक्ति को भी कोई समझा नहीं सकता ।

याद रखिए, जो विनयशील है उसका त्याग दान इत्यादि करना सफल है, अभिमानी का सब निष्फल है ।अभिमानी के बिना अपराध किए ही सब लोग उसके बैरी हो जाते हैं, सभी लोग अभिमानी की निंदा करते हैं और प्रतिपल उसका पतन होते देखना चाहते हैं। अहंकारवश उसके हित की बात भी उसे समझ में नहीं आती है। वह अपने झूठे मान के लिए छल- कपट करता है तथा वांछित परिणाम प्राप्त नहीं होने पर क्रोधित हो जाता है । हरी-भरी डालियां अपने लचीलापन से आंधी तूफान सहन करने की क्षमता रखती है एवं अपने अस्तित्व बचाने के साथ विकसित होती रहती है, लेकिन सूखी डाली जो कड़क

भागचंद जैन

रहती है, जो तेज हवा, आंधी-तूफान सहन नहीं कर सकती है, उसकी नियति अंततः पेड से कटकर अलग होना ही है। इसी प्रकार अकड़ने वाला व्यक्ति समाज में, परिवार में, कहीं भी स्वीकार्य नहीं होता है। वैसे भी मृत शरीर ही अकड़ता है और ऐसे शरीर को मिट्टी में मिला दिया जाता है यानी उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है । तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति झुकना जानता है जिसमें परिस्थिति के अनुसार ढलने की क्षमता है, वही व्यक्ति आत्मा के सहज स्वाभाविक विनय-मार्दव धर्म की आराधना करता है एवं समझौता किए बिना अपना वर्चस्व कायम रख सकता है। अकसर धन, दौलत, शान और शौकत को ही मनुष्य अपना जीवन समझता है, जबकि ये सभी नाशवान है, क्षणभंगुर हैं ये सभी चीजें एक दिन सबको छोड देंगी या फिर एक दिन मजबूरन इन चीजों को छोडना ही पड़ेगा । अतः नाशवंत चीजों के पीछे भागने से अच्छा है कि अभिमान और परिग्रह को छोड़ा जाये और सभी से विनम्र भाव से व्यवहार करें । सभी को एक न एक दिन जाना ही है, तो सबसे पहले स्वयं को पहचानें । मार्दव धर्म हमें स्वयं की सही वृत्ति को समझने का माध्यम है।

उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नाना भेदज्ञान सब भासै।

उत्तम मार्दव धर्म का पालन करने से विनयशीलता का भाव प्रकट होता है एवं विविध भेद ज्ञान समझ में आने लगते है।

भागचंद जैन मित्रपुरा,
अध्यक्ष, अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर।

चाकसू में सरकारी स्कूलों के हाल बे-हाल

चाकसू, (निसं)। राज्य सरकार द्वारा बजट में शिक्षा महकमे को अच्छी खासी राशि स्वीकृत की जाती है,

- **दरवाजे एवं सुरक्षा दीवार नहीं होने से स्कूल में जानवरों का जमावड़ा**

विधायक वेदप्रकाश सोलंकी स्कूलों के विकास के लिए सर्वाधिक राशि भेजने का दावा करते हैं लेकिन यह बजट कागजों में सिमट कर रह जाता है या फिर ऊपर के लेवल से निचले स्तर तक बंदरबाट हो जाती है।

आज के वक्त उपखण्ड के बडोदिया ग्राम पंचायत में स्थित राजकीय स्कूल की दशा इन दिनों बड़ी ही खराब है यहां स्कूल के मैन दरवाजे नहीं है दीवारें भी टूटी हुई हैं जिससे आवारा जानवरों का यहां पर जमावड़ा रहता है। गौरतलब है कि यह समस्या क्षेत्र के बडोदिया विद्यालय की नहीं होकर करीब- करीब उपखण्ड के कई सरकारी स्कूलों में सरे आम देखी जा सकती है। गन्दगी के अलावा कई स्कूलों की छतों से पानी से टपक रहा है तो कई में प्लास्टर गिर रहा है तो कई स्कूलों के प्रांगण में पानी भरा देखा जा सकता है।

बड़ोदिया सरकारी स्कूल में पड़ा जानवरों का मलवा।

सरकारी स्कूलों में गठित शाला विकास समितियों का गठन भी राजनेताओं के लिए चाय पानी करने अथवा अध्यापक अध्यापिकाओं को रोब बताने तक ही सिमट कर रह गया है।

पक्षियों के दाना डालने के चार चबूतरों का लोकार्पण

अजमेर, (कासं)। पार्षद कोष से निर्मित पक्षियों के दाना डालने हेतु बनाए गए 4 चबूतरों का लोकार्पण गणेश चतुर्थी पर्यूषण पर्व के स्थापना दिवस पर किया गया।

पार्षद नितिन जैन ने बताया कि पक्षियों के लिये एक चबूतरा सरावगी मोहल्ला नया बाजार में, दो चबूतरे महावीर मोहल्ला चौक, में एक चबूतरा बाबू मोहल्ला चौक, में बनाया गया है। सभी चबूतरों पर पानी की कुंडी व दाना डाल कर लोकार्पण किया गया । माननीय पंडित सुरेश जी दवे, सचिन जैन, जगदीश खंडेलवाल, सीपी गुप्ता जी, सुभाष जी, नितिन जी दोषी, मनीष गोधा, महावीर लुहाडिया, संजय सोनी, शंकर सोनी, गजेंद्र गोधा, राजा बाबू, दीपक पटवा, नितेश सेठी, चेतन पंवार, जम्बू पाटनी, अंकुश गदिया ने समस्त रखरखाव व दाना पानी की व्यवस्था का जिम्मा के साथ शुभकामनाएं दी।

गणेश चतुर्थी पर्यूषण पर्व के स्थापना दिवस पर पक्षियों के दाना डालने के चबूतरों का लोकार्पण किया गया।

गणेश जी को भाई मानकर 11 साल से बालिका काट रही केक

पाटन, (निसं)। नीमकाथाना के औद्योगिक क्षेत्र की 14 वर्षीय बालिका भूमिका पुत्री दीपक पंजाबी अपने पिता की इकलौती बेटी है जो विगत 11 साल से भगवान गणेश जी को अपना भाई मानकर हर साल गणेश चतुर्थी यानी उनके जन्मदिन पर केक काटकर जन्मदिन मनाती है। जानकारी के अनुसार औद्योगिक क्षेत्र के वार्ड नंबर 4 निवासी 14 वर्षीय भूमिका पंजाबी की मां व छोटी बहन की 12 साल पहले गैस हादसे में मौत हो गई थी तब से ही भूमिका की देख-रेख उसके पापा दीपक पंजाबी करते आ रहे हैं क्योंकि भूमिका की दादी भी नहीं है।

जबसे भूमिका समझदार हुई है तब से भगवान गणेश को भाई मानकर गणेश चतुर्थी पर गणेश जी मंदिर में केक काटकर उनका जन्मदिन मनाती हैं तथा रक्षाबंधन पर हर साल उनको राखी बांधती है। पहले तो इसकी जानकारी किसी को नहीं थी परंतु जब इसकी जानकारी लोगों को मिली तो हर तरफ भूमिका की ही चर्चा सुनने को मिल रही है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 1 सितम्बर, 2022

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, चतुरदशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2079, चित्रा नक्षत्र रात्रि 12:12 तक, शुक्ल योग रात्रि 10:47 तक, विष्टि करण रात्रि 11:30 तक, चन्द्रमा आज दिन 12:04 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-सिंह, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज रवियोग रात्रि 12:12 तक है। आज भद्रा दिन 3:23 तक है। शुक्र सिंह राशि में सांय 4:18 पर प्रवेश करेगा। आज महागणपति चतुर्थी (स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त) है। गणेश पजून का श्रेष्ठ समय मध्यान्ह काल (वृश्चिक लग्न) में श्रेष्ठ बताया गया है। आज दिन 11:11 से 1:43 तक जिसमें 11:58 से 1:43 तक वृश्चिक में पूजन का समय श्रेष्ठ रहेगा।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:18 तक, शुभ 10:53 से 12:23 तक, चर 3:16 से 5:11 तक, लाभ 3:11 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:09, सूर्यास्त 6:45

मेष

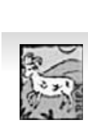

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष

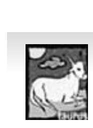

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मिथुन

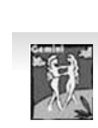

परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी और नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह

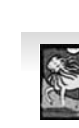

आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

तुला

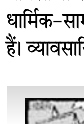

व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को बाहर जाना पड़ सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात आर्थिक मामलों में प्रगति होगी और अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृश्चिक

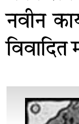

अपने आर्थिक/वित्तीय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

धनु

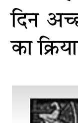

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर

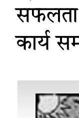

धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे।

कुंभ

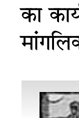

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। ाावश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

मीन

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।